दैनिक
जनता की आवाज...
लोक टुडे
विश्वसनीय खबरों का सर्वश्रेष्ठ अखबार

PK टाइम्स

pktimesnews.com
loktodaynews.com
PK Times News
thepktimesofficial
pk_timesofficial

वर्ष: 12 | अंक: 337 | मूल्य: 1.00 रुपए | पृष्ठ: 4 | सोमवार 22 जून 2026 | RNI No. RAJHIN/2013/50649

परियोजना की डीपीआर तैयार करने का काम अंतिम चरण में, यात्री सुविधाओं के साथ-साथ 'डिफेंस मूवमेंट' और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से बेहद अहम

भारत-पाक बॉर्डर के समानांतर दौड़ेगी ट्रेन

बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर और बाड़मेर के सैकड़ों गांव पहली बार जुड़ेंगे रेल सेवा से

मनोहरसिंह खोखर। जयपुर

राजस्थान के सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले नागरिकों के लिए एक बड़ी और ऐतिहासिक खुशखबरी है। रेल मंत्रालय ने राज्य के सरहदी जिलों की सुरक्षा व्यवस्था को अभेद्य बनाने और स्थानीय आबादी को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए एक महत्वाकांक्षी रेल नेटवर्क विस्तार योजना पर काम शुरू कर दिया है। इस मेगा प्रोजेक्ट के तहत प्रदेश के चार प्रमुख सीमांत जिले बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर और बाड़मेर के दर्जनों गांवों और दूर-दराज के इलाकों को पहली बार रेलवे की लाइफलाइन से जोड़ा जाएगा। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बीकानेर दौरे के दौरान इस वृहद योजना का आधिकारिक रोडमैप साझा किया। उन्होंने बताया कि इस बहुप्रतीक्षित परियोजना की डीपीआर बनाने की प्रक्रिया प्रगति पर है और इसके तहत भूमि सर्वे व अन्य तकनीकी प्रक्रियाएं तेजी से पूरी की जा रही हैं।

अनूपगढ़-खाजूवाला से जैसलमेर-बाड़मेर तक बिछेगा पटरियों का जाल -

रेल मंत्रालय के इस मास्टर प्लान के अनुसार, पाकिस्तान सीमा से सटे इलाकों में नई रेलवे लाइनें बिछाई जाएंगी। यह पूरा ट्रैक अंतरराष्ट्रीय सीमा के समानांतर रणनीतिक सुरक्षा ग्रिड तैयार करेगा, जिससे सीमावर्ती गांवों के लोगों का देश के अन्य बड़े शहरों से सीधा संपर्क स्थापित हो सकेगा।

अनूपगढ़ - खाजूवाला - जैसलमेर मार्ग
जैसलमेर - बाड़मेर मार्ग
बाड़मेर से भाभर/भीलड़ी (गुजरात कनेक्टिविटी) मार्ग

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए 'गेम चेंजर' साबित होगा प्रोजेक्ट -

केंद्रीय रेल मंत्री ने स्पष्ट किया कि सीमांत क्षेत्रों में यह रेल विस्तार केवल आम जनता की आवाजाही या यात्री सुविधा तक सीमित नहीं है। सामरिक दृष्टिकोण से यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा मील का पत्थर साबित होगा। युद्ध या आपातकाल की स्थिति में भारतीय सेना, टैंक और भारी सैन्य साजो-सामान को सीमा के अंतिम छोर तक बेहद कम समय में पहुंचाया जा सकेगा।

राजस्थान में रेल विकास का नया युग -

पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान में रेलवे के बजट में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई है। रेल मंत्री के अनुसार, जहां एक दशक पहले राजस्थान को महज 650 करोड़ का सालाना रेल बजट मिलता था, वहीं अब इसे बढ़ाकर 10,000 करोड़ से अधिक कर दिया गया है। वर्तमान में राज्य में करीब 76,000 करोड़ से अधिक के रेल विकास कार्य और आधुनिकीकरण के प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है, जिसमें अमृत भारत योजना के तहत स्टेशनों का कायाकल्प भी शामिल है। सीमांत क्षेत्रों में रेल नेटवर्क के इस नए ब्लूप्रिंट की घोषणा के बाद सरहदी जिलों के ग्रामीणों, व्यापारियों और पर्यटन उद्योग से जुड़े लोगों में भारी उत्साह है। उम्मीद जताई जा रही है कि डीपीआर को अंतिम मंजूरी मिलते ही इसी वर्ष इस नई रेल लाइनों के शिलान्यास की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी।

बीकानेर (लालगढ़)-अहमदाबाद (साबरमती) एक्सप्रेस को दिखाई हरी झंडी-

केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव तथा केंद्रीय विधि एवं न्याय एवं संसदीय कार्य राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने रविवार को बीकानेर रेलवे स्टेशन से बीकानेर-लालगढ़-अहमदाबाद (साबरमती) एक्सप्रेस रेल सेवा का शुभारंभ करते हुए ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि रेल मंत्रालय द्वारा राजस्थान के सीमांत क्षेत्रों को मजबूत रेल नेटवर्क से जोड़ने की महत्वाकांक्षी योजना पर कार्य किया जा रहा है। इसके तहत बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर और बाड़मेर जिलों के अनेक गांवों को रेलवे सुविधा से जोड़ने का प्रकल्प हाथ में लिया गया है। उन्होंने बताया कि इस परियोजना की डीपीआर बनाने सहित विभिन्न प्रक्रियाएं प्रगति पर हैं।

1300 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास -

वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देशभर के 1300 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। अनेक स्टेशनों का कार्य पूर्ण हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि बीकानेर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के लिए जून माह में पुनः टेंडर जारी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जैसलमेर सहित विभिन्न रेलवे स्टेशन आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किए गए हैं, जिनकी देश-विदेश के पर्यटकों द्वारा सराहना की जा रही है।

लॉजिस्टिक्स और व्यापार को गति:

थार के रेगिस्तानी इलाकों से खनिज, कृषि उत्पाद और स्थानीय हस्तशिल्प को देश की बड़ी मंडियों और बंदरगाहों तक पहुंचाने में लगने वाला समय आधा रह जाएगा। इस ऐतिहासिक रेल परियोजना को धरातल पर उतारने में केंद्रीय कानून मंत्री और बीकानेर के सांसद अर्जुनराम मेघवाल की विशेष भूमिका रही है। सीमावर्ती क्षेत्रों की जनता की लंबे समय से चली आ रही इस मांग को लेकर वे लगातार रेल मंत्रालय और केंद्र सरकार के स्तर पर सक्रिय थे। उनकी लगातार पैरवी और प्रयासों के बाद ही रेल मंत्रालय ने इस परियोजना को प्राथमिकता सूची में शामिल कर बजट व डीपीआर प्रक्रिया को गति दी है।

बेटे को बचाने डिग्गी में कूदी मां, दोनों की डूबने से मौत

लोक टुडे

बाड़मेर। क्षेत्र के स्वामियों की बेरी दूधु गांव में रविवार को एक हृदयविदारक हादसा हो गया, जहां पानी से भरी डिग्गी में डूबने से मां और बेटे की मौत हो गई। घटना के बाद पूरे गांव में शोक की लहर फैल गई।
जानकारी के अनुसार 6 वर्षीय बालक का पैर फिसलने से वह पानी से भरी डिग्गी में गिर गया। बेटे को बचाने के प्रयास में उसकी 32 वर्षीय मां भी डिग्गी में कूद गई, लेकिन दोनों गहरे पानी में डूब गए। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंचे और काफी प्रयासों के बाद दोनों को बाहर निकाला गया। हादसे के बाद मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई।
मां-बेटे की मौत से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है, वहीं पूरे क्षेत्र में शोक का माहौल बना हुआ है। पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई के बाद शव परिजनों को सौंप दिए।

पश्चिम बंगाल में ट्रेलर से टकराई यात्री बस, 4 की मौत; 57 घायल

कोलकाता।

पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में रविवार को एक भीषण सड़क हादसे में चार लोगों की मौत हो गई, जबकि 57 यात्री घायल हो गए। इनमें से 10 की हालत गंभीर बताई जा रही है। हादसा राष्ट्रीय राजमार्ग-27 पर मयनागुड़ी क्षेत्र के उल्लाडाबाड़ी इलाके में हुआ, जहां यात्रियों से भरी नॉर्थ बंगाल स्टेट ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन (एनबीएसटीसी) की बस सड़क किनारे खड़े एक ट्रेलर के पीछे जा टकराई। पुलिस के अनुसार, दुर्घटना में घायल यात्रियों को नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। गंभीर रूप से घायल 10 यात्रियों का इलाज चल रहा है। चार लोगों ने अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। मृतकों में एक की पहचान साजल सरकार के रूप में हुई है, जबकि अन्य तीन की पहचान अभी नहीं हो सकी है।
जलपाईगुड़ी की पुलिस अधीक्षक सुजाता कुमारी वीणापानी ने हादसे में चार लोगों की मौत की पुष्टि की है। पुलिस के मुताबिक, 37 घायलों का इलाज जलपाईगुड़ी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में चल रहा है, जबकि 20 अन्य घायलों को मयनागुड़ी ग्रामीण अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि सिलिगुड़ी से कूचबिहार जा रही एनबीएसटीसी की बस तीस्ता पुल पार करने के बाद उल्लाडाबाड़ी इलाके में पहुंची थी। इसी दौरान तेज रफ्तार बस राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे खड़े एक ट्रेलर के पिछले हिस्से से जा टकराई।

टक्कर इतनी भीषण थी कि बस का अगला हिस्सा ट्रेलर के पिछले हिस्से में बुरी तरह फंस गया। बस की आगे की सीटों पर बैठे कई यात्री वाहन के क्षतिग्रस्त हिस्से में फंस गए।
हादसे की आवाज सुनकर स्थानीय लोग सबसे पहले मौके पर पहुंचे और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया। सूचना मिलने के बाद पुलिस, दमकल विभाग और एंबुलेंस की टीमें भी घटनास्थल पर पहुंचीं।

14,000 फीट की ऊंचाई से लेकर समुद्र की गहराई में योगाभ्यास, नौसेना और केंद्रीय बलों ने मनाया योग दिवस

लोक टुडे

नई दिल्ली। देशभर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। भारतीय नौसेना और केंद्रीय बलों की ओर से योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास किया गया। भारतीय नौसेना ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। नौसेना की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट कर लिखा गया, 'मन से शांत। शरीर से मजबूत। सेवा के प्रति समर्पित।' नौसेना की ओर से आगे लिखा गया, 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर नौसेना ने 'स्वस्थ बुढ़ापे के लिए योग' थीम को अपनाया है, जिससे एक स्वस्थ और मिशन के लिए तैयार फोर्स की नींव मजबूत हो रही है। भाजपा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट कर लिखा, 'समंदर की गहराइयों में भी योग का संकल्प। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर भारतीय नौसेना के पनडुब्बी योद्धाओं ने योगाभ्यास कर अनुशासन, आत्मबल और भारतीय संस्कृति का अद्भुत संदेश दिया।
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) जवानों ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास किया। सीआरपीएफ की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट कर लिखा गया कि बेहतर भविष्य के लिए योग! सीआरपीएफ की ओर से 'एक्स' पोस्ट में लिखा गया, 'देश भर में सीआरपीएफ यूनिट्स ने सामूहिक योग सत्रों के साथ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। नई दिल्ली के एसडीजी कैंप में सीआरपीएफ के डीजी जी. पी. सिंह और वरिष्ठ अधिकारियों ने योगाभ्यास किया। इस साल की थीम 'स्वस्थ बुढ़ापे के लिए योग' के अनुरूप, उनका यह समर्पण हम सभी को जीवन के हर पड़ाव पर फिट और सक्रिय रहने के लिए प्रेरित करता है।'
इंडो-तिब्बत बॉर्डर पुलिस (आईटीबीपी) के जवानों ने भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। आईटीबीपी की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा गया, '14,000 फीट की ऊंचाई पर शरीर, मन और आत्मा को मजबूत बनाना।' आगे लिखा गया कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर, लेह-लद्दाख में पैंगोंग त्सो के किनारे आईटीबीपी की 47वीं बटालियन के हिमवीरों ने योग किया और फिटनेस, सहनशक्ति और आंतरिक शक्ति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के जवानों ने भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास किया। सीआईएसएफ की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट किया गया कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, स्वस्थ बुढ़ापे के लिए योग। योग, मानवता को भारत का एक अनमोल उपहार है, जो मन, शरीर और प्रकृति के बीच तालमेल को बढ़ावा देता है। यह सीमाओं से परे है और एक स्वस्थ दुनिया के लिए सहनशक्ति, आंतरिक मजबूती और समग्र कल्याण को बढ़ावा देता है।
सीआईएसएफ की ओर से आगे लिखा गया, 'सीआईएसएफ के लिए, योग दैनिक जीवन का एक अहम हिस्सा है, जो शारीरिक फिटनेस, मानसिक मजबूती और ऑपरेशनल तैयारी को बेहतर बनाता है। नियमित अभ्यास के जरिए, सीआईएसएफ के जवान अनुशासन, संतुलन और सेहत की भावना को बनाए रखते हैं और पूरी निष्ठा के साथ देश की सेवा करते हैं। इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर, आइए हम इस प्राचीन अभ्यास को अपनाएं और शांति, संतुलन और सेहत से भरे भविष्य की ओर मिलकर आगे बढ़ें।

वैभव सूर्यवंशी की फास्टेस्ट फिफ्टी से इंडिया-ए चैंपियन

29 गेंदों पर 94 रन बनाए, फाइनल में श्रीलंका-ए को 66 रन से हराया

दांबुला।

इंडिया-ए ने फाइनल में श्रीलंका-ए को 66 रन से हराकर ट्राई सीरीज अपने नाम कर ली। इंडिया-ए ने दांबुला में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 9 विकेट पर 377 रन बनाए। जवाब में श्रीलंका-ए 47.1 ओवर में 311 रन पर सिमट गई।
भारत की जीत के हीरो 15 साल के वैभव सूर्यवंशी रहे। उन्होंने सिर्फ 29 गेंदों पर 94 रन की पारी खेली। 11 छक्के और 6 चौके भी लगाए। वैभव ने महज 11 गेंदों में अर्धशतक पूरा किया। उन्होंने 50 ओवर क्रिकेट की सबसे तेज फिफ्टी का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया। कप्तान तिलक वर्मा ने 67, ऋतुराज गायकवाड ने 40 और अनुकूल रॉय ने 15 गेंदों पर 39 रन का योगदान दिया।
378 रन का पीछा करने उतरी श्रीलंका-ए की शुरुआत खराब रही। टीम के लिए वनुजा सहान ने सबसे ज्यादा 62 रन बनाए। सदीरा समरविक्रमा ने 52 रन की पारी खेली। भारत-ए के लिए यश ठाकुर और विप्रज निगम ने 3-3 विकेट लिए।

वैभव ने 20 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा

वैभव से पहले 50 ओवर की क्रिकेट में फास्टेस्ट हाफ सेंचुरी श्रीलंका के कौशल्य वीरात्ने ने बनाई थी। उन्होंने 2006 में रागामा क्रिकेट कल्ब की ओर से खेलते हुए 12 बॉल पर फिफ्टी पूरी की थी। सीनियर लेवल पर 50 ओवर की क्रिकेट में दो तरह के मैच होते हैं। लिस्ट-ए और वनडे इंटरनेशनल। हर वनडे इंटरनेशनल अपने आप में एक लिस्ट-ए मैच भी होता है।

कॉकरोच जनता पार्टी का दूसरे दिन भी प्रदर्शन जारी

शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग पर जंतर-मंतर पर रातभर धरना; दीपके ने क्रिकेट खेला

नई दिल्ली

हृश्वश्वञ्ज पेपर लीक के विरोध में कॉकरोच जनता पार्टी का जंतर-मंतर पर रविवार को दूसरे दिन भी प्रदर्शन जारी है। प्रदर्शनकारी शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर रातभर जंतर-मंतर पर बैठे रहे।
सीजेपी फाउंडर अभिजीत दीपके और उनके समर्थक शनिवार रात से जंतर-मंतर पर डटे हुए हैं। वे केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं।
दिल्ली पुलिस ने शनिवार शाम 5 बजे के बाद प्रदर्शन की अनुमति खत्म होने की बात कहकर जगह खाली करने के लिए कहा था। इसके बावजूद प्रदर्शनकारी रातभर जंतर-मंतर पर बैठे रहे। दीपके ने लोगों से आंदोलन का समर्थन करने की अपील की। उन्होंने NEET री-एग्जाम देने वाले छात्रों से भी परीक्षा के बाद प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की।
इससे पहले शनिवार को सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक भी प्रदर्शन में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि अगर धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा नहीं देते हैं, तो वे 27 जून से अनशन शुरू करेंगे।

योग व्यक्ति, समाज और विश्व चेतना को जोड़ने का सशक्त माध्यम : राष्ट्रपति मुर्मु

जबलपुर। मध्य प्रदेश के जबलपुर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने हिस्सा लिया और योगाभ्यास किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि योग व्यक्ति को स्वयं और समाज से, समाज को प्रकृति से तथा संपूर्ण मानवता को विश्व चेतना से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति मुर्मु ने देशवासियों और विश्वभर के योग साधकों को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा, 'जबलपुर की पावन धरती पर उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं देश-विदेश में सक्रिय सभी योग साधकों को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएं देती हूं। आज हम भारत की उस महान परंपरा का उत्सव मना रहे हैं, जिसने मानवता को स्वस्थ, संतुलित और सार्थक जीवन का मार्ग दिखाया है। योग विश्व समुदाय के लिए हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य उपहार है। यह हमारे ऋषियों-मुनियों की हजारों वर्षों की साधना का परिणाम है।'
राष्ट्रपति ने कहा, 'हमारे शास्त्रों में शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को जीवन की सफलता का आधार माना गया है। योग उसी संतुलन को स्थापित करने का मार्ग है। योग का शाब्दिक अर्थ है 'जोड़ना'। यह व्यक्ति को स्वयं और समाज से, समाज को प्रकृति से तथा संपूर्ण मानवता को विश्व चेतना से जोड़ने का सशक्त माध्यम है।'
उन्होंने कहा, 'आज जब विश्व अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब योग मानवता को शांति, संतुलन, समरसता और सामूहिक कल्याण का मार्ग दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्ष 2014 में भारत की पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रति वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस पहल के बाद विश्व कल्याण के एक सशक्त माध्यम के रूप में योग की पहचान और अधिक मजबूत हुई है। आज दुनिया के अनेक देशों में करोड़ों लोग योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना रहे हैं।'
राष्ट्रपति ने कहा कि इस महीने अहमदाबाद में आयोजित प्रथम 'वर्ल्ड योगासन एक्सपर्ट चैंपियनशिप' भी योग की बढ़ती वैश्विक स्वीकार्यता का एक उदाहरण है, जिसमें कई देशों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।
उन्होंने कहा, 'जब मैं विदेश यात्राओं पर जाती हूं, तो वहां के लोग योग के बारे में पूछते हैं। कई देशों में नियमित रूप से योगाभ्यास किया जाता है। यह भारत की पहल और योग की वैश्विक लोकप्रियता का प्रमाण है। इस वर्ष की थीम 'योग फॉर हेल्दी एजिंग' है। यह थीम वरिष्ठ नागरिकों के स्वस्थ, सक्रिय, आत्मनिर्भर और गरिमापूर्ण जीवन के लिए योग की उपयोगिता को रेखांकित करती है। आज हम जो जीवनशैली अपनाते हैं, वही भविष्य में हमारे स्वास्थ्य और सुख का आधार बनती है। योग बढ़ती आयु में भी सक्रिय और आत्मनिर्भर बने रहने में सहायक है।'

सम्पादकीय

"मानवता सुख शांति प्रेम का, अखिल विश्व में हो
विस्तारस्वतंत्रता का हनन न होवे, रहे सुरक्षित जन अधिकार"

श्रीराम मंदिर में चढ़ावा चोरी

करोड़ों हिंदुओं की आस्था के केंद्र अयोध्या के श्रीराम मंदिर में सवा साल से ज्यादा समय से चढ़ावा चोरी का जो बेखौफ खेल चल रहा था, उससे लगता है कि राम भक्तों से ज्यादा चढ़ावा चोरों को भगवान राम पर भरोसा था कि आस्था की जेब से निकले चढ़ावे की चाहे जितनी रकम डकारते जाओ, कहीं कुछ नहीं बिगड़ेगा। क्योंकि मंदिर भी राम का, भक्त भी राम के, चढ़ावा भी राम का और चढ़ावा चोर राम के और चोर पकड़ने वाले कोतवाल भी रामके। अब सवाल तो यह है कि राम भक्त आखिर करें क्या? क्या चढ़ावा चढ़ाना बंद कर दें, हाथ जोड़कर दर्शन की इतिश्री कर लें या फिर चढ़ावे को बचाने के कुछ सुरक्षित तरीके अपनाएं? जिस तरह इस भव्य मंदिर में भी चोरों का नेटवर्क सामने आया है, उस का सबक तो यही है कि मंदिर में अब श्रद्धालुओं को नकदी के बजाए डिजिटल अर्पणम् (चढ़ावे) को ही तवज्जो देनी चाहिए। दान पेटियों को अब कूड़ेदान में डाल दिया जाना चाहिए ताकि आस्था और विश्वास की पवित्रता कायम रखी जा सके। यूं भी आजकल लोग चाय-पान तक का पेमेंट भी यूपीआई से करते हैं तो भगवान की सेवा में आस्था के पत्रम् पुष्पम् के लिए यह तरीका ज्यादा सुरक्षित होगा। वैसे भगवान तो खुद दाता है, भक्त उसे भला क्या देगा। चढ़ावे के रूप में जो कुछ दान पुण्य किया जाता है, वह वास्तव में मंदिर के भौतिक रखरखाव और धर्म के प्रबंधन के लिए होता है। 21 वीं सदी में भगवान से भी यही अपेक्षा है कि वो भक्त की दानशीलता का अकाउंट ऑनलाइन ही मेंटेन करें। डिजिटल दान का बड़ा लाभ यह है कि आपकी अटूट श्रद्धा पंडे पुजारी, नोट गणक अथवा प्रबंधकों की बुरी नजर से बची रहेगी। जो अभी भी डिजिटल फ्रेंडली नहीं हैं, वो दान काउंटर पर ही चढ़ावा देकर रसीद लें ताकि ट्रस्ट और बैंक की जानकारी में भी। भगवान के हिसाब में रहे ताकि आखिर में पाप-पुण्य के ऑडिट के समय आपको वांछित 'वेटेज' मिल सके। हालांकि मानवीय नीयत के आगे यह तरीका भी सौ फीसदी सुरक्षित नहीं है। लेकिन उस दानपेटी में भोले मन से डाली गई नकदी से तो बेहतर ही है, जो गिनती के दायरे में आने से पहले ही अंटी कर ली जाती है। इस पूरे चढ़ावा कांड में आरंभिक जानकारी में पता चला है कि श्री राम मंदिर में रोजाना 5 करोड़ रुपये की नकदी और सोने-चांदी का चढ़ावा आ रहा था और इसमें से प्रतिदिन औसतन 10 लाख रुपये पर चढ़ावा चोरी गैंग हाथ साफ कर रही थी। अब खबर है कि चढ़ावा चोरी कांड उजागर होने के बाद अब नकदी चढ़ावे की राशि घटकर डेढ़ करोड़ रुपये प्रतिदिन पर आ गई है। हैरानी की बात यह है कि स्वयं भगवान के दरबार में हो रही खुलेआम चोरी को लेकर किसी के माथे पर कोई शिकन या आत्मग्लानि का भाव नहीं था, जिसमें श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ ट्रस्ट हो या मंदिर प्रबंधन अथवा सुरक्षा कर्मी। आरंभिक जांच में पुलिस ने 2.8 करोड़ की रकम जब्त भी की है। यह भी विडंबना है कि राम भक्त जिस चढ़ावे को आध्यात्मिक मोक्ष की आकांक्षा से मंदिर में चढ़ाते रहे हैं, वही पैसा चढ़ावा चोरों की भौतिक समृद्धि और अय्याशी का कारण बन रहा है। श्री राम मंदिर निर्माण में गड़बड़ियों की शिकायतें तो 37 साल पहले राम शिला पूजन अभियान से आने लगी थीं कि सोने की कई शिलाएं गायब हैं। इसमें कुछ व्यापारियों द्वारा दी गई हीरे जड़ित शिलाएं भी शामिल है। लेकिन तब इसे अफवाह या विघ्न संतोषियों की चाल मानकर दबा दिया गया था। फिर श्रीराम मंदिर जमीन अधिग्रहण मामले में भी भारी हेराफेरी की शिकायतें आईं। लेकिन उसे भी अनसुना कर दिया गया। यूं अब भारी हल्ला मचने के बाद यूपी सरकार ने तीन अफसरों की एसआईटी बनाकर जांच शुरू कर दी है। लेकिन इस मामले में अभी तक कोई प्राथमिकी किसी के खिलाफ दर्ज नहीं है। की जाएगी, इसकी भी कोई गारंटी नहीं है। यहां तक कि तीन रामभक्तों ने पुलिस में लिखित शिकायत भी दी है, लेकिन उस पर भी पुलिस ने अभी तक कोई संज्ञान नहीं लिया है। लिया जाएगा भी नहीं, कहा जा नहीं जा सकता। अलबत्ता एसआईटी की जांच के दौरान चढ़ावा चोरी के व्यापक नेटवर्क और ऊपरी वरदहस्त की जानकारियां जरूर सामने आ रही हैं। सवाल उठता है कि क्या सारी व्यवस्था ही अंधी है?शक की सुई श्रीराम मंदिर तीर्थ ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय के इर्द गिर्द घूम रही है। हालांकि उन्हें बचाने वालों में से एक वरिष्ठ पदाधिकारी नृपेन्द्र मिश्रा का कहना है कि चंपत राय बेदाग हैं। लेकिन एक अदने से राम भक्त के मन में उठने वाले इन सवालों कि अगर चंपत या बेदाग हैं तो मंदिर में चढ़ावा चोरी का खेल इतने दिनों से कैसे चल रहा था, किसके संरक्षण में चल रहा था? चंपत राय को इसकी खबर कैसे नहीं लगी? लगी तो उन्होंने तत्काल इसे रोकने की कार्रवाई क्यों नहीं की? कहते हैं कि चंपत राय के बिना श्रीराम मंदिर में पत्ता नहीं हिलता तो फिर उन्हें इतने बड़े घपले की हवा कैसे नहीं लगी? अगर उन्हें यह 'खुला रहस्य' भी पता नहीं था तो वो महासचिव के पद पर बैठ कर क्या रहे थे? अगर वो गाफिल थे तो यह भी कर्तव्य के प्रति गंभीर लापरवाही और नैतिक अपराध है। हो सकता है कि सपा नेता अखिलेश यादव इस मुद्दे को न उठाते तो इस चढ़ावा चोरी पर पर्दा पड़ा रहता और राम भक्त यूं ही ठगे जाते रहते। पहले भाजपा नेताओं और श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के ट्रस्टियों इसे खारिज किया। लेकिन जब संतों, कुछ पुराने विहिप नेताओं और भाजपा सांसदों ने ही चढ़ावा चोरी में घपले की बात उठानी शुरू की तो सरकार चेती। चढ़ावे की रकम स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के स्टाफ के सहयोग से की जाती है। लेकिन एसबीआई भी इस मामले में मौन धारण किए रहा। अभी तक कुल कितनी राशि गबन की गई और किस किस की जेब में गई, यह तो निष्पक्ष जांच के बाद ही पता चलेगा।

अमेरिका बनाम ईरान: दोस्ती और दुश्मनी के टूटे पैमाने

ट्रंप का ईरानी अभियान भले पूरी तरह से नाकाम न रहा हो, पर जिस तरह से यह खत्म हुआ, उससे यह अमेरिका की जीत तो नहीं लगती। यह दुनिया को याद भी दिलाता है कि अमेरिका का दुश्मन होना खतरनाक हो सकता है, लेकिन उसका दोस्त होना भी कोई कम जानलेवा नहीं।

ईरान के सैन्य नेताओं ने राष्ट्रपति ट्रंप के साथ हुए युद्धविराम समझौते को अपनी जीत करार दिया है। उनका दावा है कि उन्होंने अपनी 'अपनी दैवीय और मजबूत इच्छाशक्ति के दम पर' अमेरिका और इस्राइल को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। काफी हद तक वे सही भी हैं। लेकिन, यह याद रखना जरूरी है कि ईरान की मौजूदा सरकार, सात अक्तूबर, 2023 को इस्राइल पर हमास के हमले से पहले की तुलना में काफी कमजोर हो गई है। उस समय सीरिया, लेबनान, गाजा और यमन में ईरान के मजबूत सहयोगी और प्रॉक्सी (उसके लिए लड़ने वाले गुट) मौजूद थे। उसका परमाणु कार्यक्रम सुरक्षित था और वह लगातार उच्च स्तर पर संवर्धित यूरेनियम का भंडार बढ़ा रहा था। साथ ही, उसके पास एक सक्षम सैन्य-औद्योगिक ढांचा, चुनौतियों के बावजूद काम करती अर्थव्यवस्था और ऐसी सरकार थी, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त थी, भले ही उस पर दमनकारी नीतियों के आरोप लगते रहे।

लेकिन, आज हालात काफी बदल चुके हैं। ईरान की कई रणनीतिक ताकत या तो कमजोर पड़ गई है या लगभग समाप्त हो चुकी है। ईरान अब परमाणु हथियार बनाने के अपेक्षया कम करीब है। सीरिया में उसका प्रमुख सहयोगी सत्ता से बाहर हो चुका है। हिज्बुल्लाह, हमास और हूती विद्रोही जैसे उसके प्रमुख सहयोगी गुट पहले की तुलना में काफी कमजोर हो गए हैं। ईरानी रियाल दुनिया की सबसे कमजोर मुद्राओं में गिनी जा रही है। देश की सरकार एक ऐसे समाज पर शासन कर रही है, जिसमें व्यापक असंतोष दिखाई देता है और कट्टर समर्थकों को छोड़ दें, तो बड़ी संख्या में लोग अवसर मिलने पर सत्ता परिवर्तन का समर्थन कर सकते हैं। इस्राइल पर दागी गई उसकी हालिया बैलिस्टिक मिसाइलों से भी कोई खास नुकसान नहीं हुआ। वहीं, होर्मुज जलडमरूमध्य में तनाव और संभावित नाकेबंदी ने वैश्विक ऊर्जा बाजारों पर दबाव तो जरूर बनाया, लेकिन वे पूरी तरह से ठप नहीं हुए। एक दमनकारी और विस्तारवादी शासन के खिलाफ यह निश्चित रूप से बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है। फिर भी, किसी युद्ध का नतीजा केवल दोनों पक्षों की सैन्य ताकत से नहीं, बल्कि दोनों की इच्छाशक्ति के स्तर से भी तय होता है। और, इस मोर्चे पर तेहरान के सख्त रुख वाले नेताओं ने वाशिंगटन के नेतृत्व पर निर्णायक जीत हासिल की है। मैं यह बात एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर लिख रहा हूं, जिसने शुरू से ही इस युद्ध का समर्थन किया और उम्मीद की थी कि ट्रंप इसे किसी निर्णायक नतीजे तक पहुंचाएंगे। भले ही ईरानी शासन सत्ता में बना रहता, पर कम से कम ऐसा समझौता तो होता, जिसमें ईरान अपनी सभी यूरेनियम संवर्धन क्षमताओं को छोड़ने पर मजबूर हो जाता और होर्मुज जलडमरूमध्य से वैश्विक आवाजाही बिना किसी रोक-टोक के जारी रहती। और, इन लक्ष्यों को हासिल करना राष्ट्रपति ट्रंप के लिए असंभव भी नहीं था। लेकिन, जब ईरान में सत्ता परिवर्तन के संकेत नहीं मिले और तेल-गैस की कीमतें बढ़ने लगीं, तो ट्रंप घबरा गए। करीब छह सप्ताह तक चली सैन्य कार्रवाई के बाद उन्होंने उस युद्ध से लगभग हाथ खींच लिए, जिसे उन्होंने खुद बढ़ाया था। उन्होंने बार-बार सैन्य कार्रवाई की चेतावनी दी, पर आखिरी समय में पीछे हट गए। इन कदमों ने ईरान और उसके सहयोगियों को संदेश दिया कि अमेरिकी नेतृत्व अपने फैसलों को लेकर पूरी तरह स्पष्ट और दृढ़ नहीं है। इससे अमेरिका की स्थिति मजबूत होने के बजाय कमजोर दिखाई दी। गौरतलब है कि ट्रंप ईरान से 'बिना शर्त आत्मसमर्पण' की मांग कर चुके थे और अफगानिस्तान से अपमानजनक वापसी के लिए अपने पूर्ववर्ती नेतृत्व की बार-बार आलोचना भी करते रहे थे। हालांकि, यह ऐसे राष्ट्रपति के लिए बिल्कुल अजीब नहीं है, जिसकी फितरत ही हर किसी को धोखा देना और अपनी ही बातों से मुकर जाना है। हालांकि, इस समझौते की पूरी शर्तें अभी सामने नहीं आई हैं, जो इसके कमजोर होने का बड़ा संकेत है। अगर समझौता वास्तव में मजबूत होता, तो ट्रंप प्रशासन उसकी उपलब्धियों का खुलकर प्रचार करता। पर, इतना जरूर साफ है कि ट्रंप ने उन ईरानी नागरिकों से किया अपना वादा पूरा नहीं किया, जिनसे उन्होंने कहा था कि 'मदद रास्ते में है।' यह आश्वासन उस समय दिया गया था, जब जनवरी में सरकार विरोधी प्रदर्शनों को हिंसक तरीके से दबाया जा रहा था। ट्रंप इस लड़ाई में अपने मुख्य सहयोगी इस्राइल को भी धोखा देने की राह पर हैं। वह यरूशलेम पर दबाव डाल रहे हैं कि वह उत्तर में हिज्बुल्लाह के हमलों को रोकने की कोशिश से पीछे हट जाए। इस तरह वह तेहरान को लेबनान और होर्मुज के बीच कूटनीतिक संबंध बनाने की जीत भी सौंप रहे हैं। अगर ईरान को अब होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने वाले जहाजों के लिए किसी तरह का सेवा शुल्क वसूलने की इजाजत दी जाती है, तो इसका मतलब होगा कि ट्रंप फारस की खाड़ी में अमेरिका के सहयोगियों को भी धोखा देंगे। ऐसा करके वह ईरान को ऐसी वित्तीय और रणनीतिक बढ़त देंगे, जिसका उसे कोई अधिकार नहीं है और जो उसके पास पहले भी नहीं था। सबसे बुरा धोखा उन अमेरिकियों के साथ हुआ है, जिन्होंने इस युद्ध का समर्थन किया था। सिर्फ मेरे जैसे परंपरागत रूढ़िवादी ही नहीं, बल्कि ट्रंप के कई मागा समर्थक भी इस युद्ध के पक्ष में थे, क्योंकि उनका मानना था कि पिछले 47 वर्षों से अमेरिका के विरोध में खड़ा ईरान अब देश की सुरक्षा और रणनीतिक हितों के लिए बड़ा खतरा बन चुका है। यह युद्धविराम उस खतरे को न तो समाप्त करता है और न ही उसे कम करता है।

संभव नहीं नेहरू और मोदी की तुलना

सुधांशु त्रिवेदी

देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और वर्तमान पीएम नरेन्द्र मोदी की तुलना का तथ्यात्मक विश्लेषण करना चाहिए। कैबिनेट मिशन प्लान के तहत नए कांग्रेस अध्यक्ष को अंग्रेजों के अधीन अंतरिम सरकार का नेतृत्व करना था। अप्रैल 1946 में कांग्रेस कार्यसमिति में राज्यों से नाम आए। उनमें एक वोट कृपलानी एवं पट्टाभी सीतारमैया को और शेष सारे वोट सरदार पटेल को थे और नेहरू जी को शून्य वोट। इसके बावजूद गांधीजी की कृपा से नेहरू प्रधानमंत्री के उम्मीदवार बने। ये संदर्भ नेहरू सेलेक्टेड वर्क्स, मौलाना आजाद, सरदार पटेल और कृपलानी जी की पुस्तकों में वर्णित हैं। इसके बाद वेवल द्वारा ब्रिटिश क्राउन के प्रति निष्ठा की शपथ लेकर 2 सितंबर, 1946 को नेहरू ने अंतरिम सरकार और 15 अगस्त, 1947 को माउंटबेटन द्वारा शपथ लेकर नेतृत्व संभाला। इसके बाद 13 मई, 1952 को वे आम चुनाव जीतकर आए। गांधीजी की कृपा, अंग्रेजों की सुविधा और विपक्ष-विहीन चुनाव से होते हुए वे पीएम पद तक पहुंचे। इसके विपरीत 13 सितंबर, 2013 को भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक में मोदी सर्वसम्मति से पीएम पद के उम्मीदवार बने। संपूर्ण पार्टी का समर्थन और उसके बाद प्रबल जनसमर्थन प्राप्त कर बिना किसी कृपा, सुविधा के पूर्ण बहुमत हासिल करके उन्होंने भारत की लोकतांत्रिक राजनीति का एक नया अध्याय लिखा। इस तरह मोदी की नेहरू से तुलना बेमानी है। चीन जब तिब्बत में था और चीनी सेना के सामने भुखमरी की चुनौती थी, तब तिब्बत में सड़कें चीन की तरफ नहीं, बल्कि भारत की तरफ बेहतर थीं।

नेहरू ने चीनी सेना को 3,500 टन चावल भिजवाया। 1947 में चीन के पास वायु सेना नहीं थी, भारत के पास थी। चीन की वायु सेना 1949 में बनी। फिर भी 1962 में 19 नवबंर, 1962 को नेहरू ने अमेरिकी राष्ट्रपति कैनेडी को पत्र लिखकर उनसे सिर्फ विमान ही नहीं मांगे, बल्कि पूर्वोत्तर बचाने के लिए भारतीय वायु सेना की एक प्रकार से कमान अमेरिका को देने के लिए लिखा। अमेरिका में भारत के तत्कालीन राजदूत नेहरू जी के भतीजे बीके नेहरू ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि यह पत्र इतना अपमानजनक था कि राष्ट्रपति के सलाहकार को देने के बाद वे अपने को रोने से नहीं रोक पाए। जब गलवन में चीन के साथ संघर्ष में हमारे 20 जवान बलिदान हुए तो अंतरराष्ट्रीय स्रोतों के अनुसार चीन के 55-60 सैनिक मारे गए। संभवत: बड़ी संख्या की वजह से ही चीन ने अपने मारे गए सैनिकों की सूची कभी जारी ही नहीं की। बालाकोट के समय पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में वहां के एक सांसद ने कहा था कि पाकिस्तानी विदेश मंत्री बैठे थे, सेना प्रमुख आए। उनके पांव कांप रहे थे और उन्होंने कहा, खुदा का वास्ता है कि अभिनंदन को वापस कर दो, वरना रात 9 बजे तक भारत आक्रमण कर देगा। साफ है कि नेहरू की लचर सैन्य नीति और मोदी की सुदृढ़ सैन्य नीति की कोई तुलना नहीं। 15 अगस्त 1947 को नेहरू स्वतंत्र भारत में सरकार का नेतृत्व संभालते हैं। इसके बाद जम्मू-कश्मीर का एक हिस्सा, अक्साई चिन और मानसरोवर भारत से अलग हो जाता है। पाकिस्तान कश्मीर पर आक्रमण कर देता है और नेहरू स्वयं कश्मीर को यूएन ले जाते हैं और संविधान में अनुच्छेद-370 शामिल करते हैं। दूसरी तरफ मोदी के नेतृत्व में अगस्त 2019 में जब वही अनुच्छेद 370 समाप्त होता है, तब पाकिस्तान और उसके तमाम अंतरराष्ट्रीय आका एक भी प्रस्ताव भारत के खिलाफ यूएन में नहीं ला पाते। नेहरू ने अंग्रेजों के जाने के बाद भी भारत के स्वाभिमान को उठने नहीं दिया। उन्होंने सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार का विरोध किया और मोदी ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया। नेहरू ने 17 मार्च, 1959 को अपने भाषण में कहा था कि दक्षिण भारत के विशाल मंदिरों के गलियारों में वे डिप्रेस्ड महसूस करते हैं और ताजमहल के सामने आनंद से सराबोर रहते हैं। दूसरी तरफ मोदी ने काशी विश्वनाथ, केदारनाथ, महाकाल, करतारपुर साहब कोरिडोर और श्रीरामलला के भव्य मंदिर का मार्ग प्रशस्त कर भारत के स्वाभिमान को जगाया। नेहरू ने विज्ञान और तकनीक के लिए कुछ आवश्यक कदम उठाए, पर उनका विचार विज्ञान में भी पश्चिम का पिछलग्गू बनने से प्रेरित रहा। भारत कर सकता है, यह आत्मविश्वास उनमें नहीं था। यदि 1950 में ही एम्स के साथ आयुर्वेदिक एम्स भी बन गया होता, जो मोदी ने बनवाया तो आज हम चिकित्सा के इस क्षेत्र में विश्व में अग्रणी होते। तब मलेरिया की हर्बल दवाई का नोबेल पुरस्कार चीन और उपवास रखने पर शरीर को लाभ मिलने का नोबेल पुरस्कार 2016 में जापान को नहीं जाता। वर्ष 1959 में राधा कृष्णनन समिति की अनुशंसा पर देश में कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बनने का विचार आया और पंतनगर देश का ऐसा पहला विश्वविद्यालय बना। यह उचित विचार था, पर कृषि में पश्चिम के अंधानुकरण के साथ यदि भारत की परंपरागत जैविक कृषि के लिए भी विश्वविद्यालय बना होता तो आज दुनिया जिस जैविक कृषि के लिए लालायित है, उसमें हम विश्व का नेतृत्व कर रहे होते। मोदी ने आयुर्वेद को विश्व के पटल पर मान्यता दिलवाई और जैविक कृषि का अभियान शुरू किया। होमी भाभा के प्रयासों से भारत नेहरूजी के समय में ही परमाणु शक्ति बन सकता था, पर नेहरू ने ऐसा नहीं किया। मोदी ने भारत की जल, थल और वायु तीनों सेनाओं को आणविक शक्ति से लैस किया। 16 मई, 2014 को जब मोदी के नेतृत्व में भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिला तो 18 मई को लंदन के अखबार संडे गार्डियन ने अपने संपादकीय का शीर्षक दिया, नियति के साथ भारत का दूसरा मिलन। यह 15, अगस्त 1947 को नेहरू के ऐतिहासिक भाषण नियति के साथ भारत का मिलन से तुलना थी। अखबार ने लिखा कि 1947 के बाद जिन दलों का शासन रहा, वे ब्रिटिश विरासत के विचार से प्रेरित रहे थे। अब एक ऐसे दल के हाथ में पूर्ण सत्ता आई है, जिस पर कोई ब्रिटिश प्रभाव नहीं है। उसने यह भी लिखा कि 16 मई, 2014 का दिन भारत के इतिहास में इस रूप में अंकित होना चाहिए, जिस दिन अंग्रेज अंतिम और निर्णायक रूप से भारत से विदा हो गए।

वर्ष 1959 में राधा कृष्णनन समिति की अनुशंसा पर देश में कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बनने का विचार आया और पंतनगर देश का ऐसा पहला विश्वविद्यालय बना।

जरूरी हैं ऑनलाइन गेमिंग की सीमाएं

हाल ही में, ऑनलाइन गेमिंग के प्रचार एवं विनियमन नियम, 2026 लागू हो गए। ये नियम अगस्त 2025 में संसद द्वारा पारित ऑनलाइन गेमिंग संवर्धन एवं विनियमन अधिनियम, 2025 से प्रेरित हैं। अधिनियम का मकसद उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन मनी गेमिंग के बढ़ते वित्तीय और सामाजिक जोखिमों से बचाते हुए नवाचार तथा रचनात्मकता को बढ़ावा देना है। इसमें जहां असली पैसों वाले खेलों पर आपराधिक दंड के साथ प्रतिबंध लगा दिया गया है, वहीं यह ई-स्पोर्ट्स और ऑनलाइन सोशल गेम्स के लिए स्पष्ट मार्ग प्रशस्त करता है। यह अधिनियम ऑनलाइन खेलों के विज्ञापन, प्रचार और सुविधा प्रदान करने पर भी रोक लगाता है। साथ ही, बैंकों और भुगतान प्रणालियों को ऐसे खेलों से जुड़े लेनदेन को संसाधित करने से प्रतिबंधित किया गया है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 के अनुसार, अवैध प्लेटफार्मों को अवरुद्ध किया जा सकता है। इसके अलावा, यह शिकायत निवारण तंत्र और उपयोगकर्ताओं को नुकसान से बचाने के लिए सुरक्षा उपाय भी प्रदान करता है। अनुमानत: पैंतालीस करोड़ भारतीय ऑनलाइन मनी गेमिंग प्लेटफॉर्म से प्रभावित हुए हैं, जिससे बीस हजार करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ है। लत, आर्थिक बर्बादी, मनी लॉन्ड्रिंग और आत्महत्याएं, ये सभी इस क्षेत्र से जुड़े जोखिम हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, अधिनियम में ऑनलाइन धन-आधारित खेलों का संचालन या उन्हें बढ़ावा देने पर तीन साल तक की जेल और एक करोड़ रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है। बार-बार अपराध करने पर सजा पांच साल व जुर्माना दो करोड़ रुपये तक बढ़ सकता है। ऐसे खेलों के विज्ञापन पर भी दो साल तक की कैद और 50 लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है। राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों के साइबर सेल अधिकारी अपराधों की जांच करने के लिए सशक्त हैं। नए ढांचे के केंद्र में ऑनलाइन गेमिंग अथॉरिटी ऑफ इंडिया है। यह प्राधिकरण ऑनलाइन मनी गेम्स की सूची तैयार करेगा, शिकायतों की जांच करेगा, आवश्यक निर्देश व आचार संहिता जारी करेगा तथा उपयोगकर्ताओं की अपीलों का निपटारा करेगा। गेम वर्गीकरण से जुड़े निर्णय 90 दिनों के भीतर लिए जाएंगे। केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित किए जाने पर ई-स्पोर्ट्स और ऑनलाइन सोशल गेम्स का पंजीकरण अनिवार्य है, जो उपयोगकर्ताओं के लिए जोखिम, लेनदेन और मूल देश जैसे कारकों पर आधारित है। सफल आवेदन पर एक यूनिक संख्या वाला डिजिटल पंजीकरण प्रमाणपत्र प्राप्त होता है, जो दस वर्षों तक वैध रहेगा। पंजीकरण ?के समय सेवा प्रदाताओं को अपनी सुरक्षा सुविधाओं व आंतरिक शिकायत निवारण तंत्रों का खुलासा करना होगा। प्लेटफॉर्म द्वारा दिए गए समाधान से असंतुष्ट उपयोगकर्ता तीस दिनों के भीतर प्राधिकरण से संपर्क कर सकते हैं, जिसका लक्ष्य ऐसी अपीलों का निपटारा अगले तीस दिनों के भीतर करना है। कार्यवाही यथासंभव डिजिटल माध्यम से की जाएगी। जुर्माने का निर्धारण करते समय सेवा प्रदाताओं के निवारण प्रयासों पर भी विचार किया जाएगा। सभी जुर्माने भारत की संचित निधि में जमा किए जाएंगे। सरकार का तर्क है कि भारत उन अन्य देशों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है, जो गेमिंग के आर्थिक वादे और सामाजिक जोखिमों के बीच समान तनाव से जूझ रहे हैं, और यह दर्शाता है कि नवाचार तथा मजबूत सुरक्षा उपाय परस्पर विरोधी नहीं है।

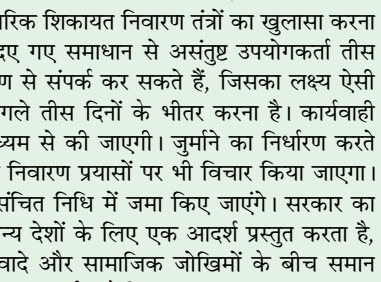

प्रतिगामी है जनसंख्या प्रोत्साहन नीति

प्रो. रसाल सिंह

हाल में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने राज्य की नई जनसंख्या प्रबंधन नीति के अंतर्गत तीसरे बच्चे के जन्म पर 30 हजार और चौथे बच्चे के जन्म पर 40 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की है। प्रदेश में दूसरे बच्चे के जन्म पर पहले से ही 25 हजार रुपये प्रोत्साहन स्वरूप दिए जाते हैं। ऐसे फैसलों के पीछे की वजह राज्य की गिरती 'कुल प्रजनन दर' और जनसांख्यिकीय असंतुलन की चुनौतियों से निपटना है, लेकिन वास्तविकता के धरातल पर देखें तो यह कदम लोकसभा में अपने राज्य का प्रतिनिधित्व घटने की आशंका और असुरक्षा की उपज है। संभव है कि जनसंख्या में संकुचन से जूझ रहे अन्य प्रदेश विशेषकर दक्षिणी राज्य भी आंध्र की यह राह पकड़ सकते हैं। ऐसा कोई प्रोत्साहन नितांत संकुचित सोच का ही परिणाम है, जिसमें राज्य के हित को राष्ट्र हित से ऊपर देखा जा रहा है। यह गिरती प्रजनन दर की सतही समझ और जनसांख्यिकीय असंतुलन के शार्टकट समाधान से अधिक कुछ नहीं है।नायडू की गिनती प्रगतिशील नेताओं में होती है और अतीत में वे समेकित राष्ट्रीय जनसंख्या नीति बनाने के पैरोकार भी रहे हैं, लेकिन उनका यह निर्णय प्रतिगामी है। यह राष्ट्रीय हितों के बरक्स वोट बैंक की राजनीति और प्रभावी दबाव समूह बने रहने की चाह का प्रतिफलन है। नायडू का यह सोच उन वर्गों का हौसला ही बढ़ाएगा, जो अपनी संख्या से राजनीतिक वर्चस्व की चाह

रखते हैं। अगर जनसंख्या में कमी को एक समस्या के रूप में देखा जा रहा है तो फिर उसके उचित समाधान तलाशने होंगे। इसकी एक वजह बड़ी संख्या में युवाओं का समय पर विवाह न करना है। अगर देरी से विवाह हो भी जाए तो वे एक ही संतान को पर्याप्त समझने लगे हैं। आज के प्रतिस्पर्धा से भरे जीवन और संयुक्त परिवारों के घटते चलन में बच्चों के पालन-पोषण की चुनौतियां कहीं अधिक बढ़ गई हैं। ऐसे पहलुओं ने भी प्रजनन दर को प्रभावित किया है और एक हद तक इससे जनसांख्यिकीय असंतुलन की स्थिति भी निर्मित हो रही है। चूंकि भारत में प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र है तो घटती जनसंख्या वाले राज्यों को अपने राजनीतिक प्रभाव को लेकर भी चिंता सता रही है। यह आशंका सिर्फ राज्यों की ही नहीं है, बल्कि तमाम धार्मिक और जातीय समुदायों में भी फैल रही है। ऐसी चिंताओं के बावजूद जनसंख्या बढ़ाने संबंधी प्रोत्साहन उचित नहीं, क्योंकि भारत में संसाधन और सुविधाएं सीमित हैं। इन सीमित संसाधनों पर पहले ही भारी जनसंख्या का दबाव है। जनसांख्यिकीय लाभांश की बात करें तो जनसंख्या और मानव संसाधन में अंतर होता है। कमाने वाले हाथों और आश्रितों के बीच सही संतुलन आवश्यक है। वर्तमान युग तो मशीन और तकनीक का है। इस कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अत्यधिक विकसित तकनीकी उपकरणों वाले युग में तो कमाने वाले हाथों को सोचने वाले मस्तिष्क ने काफी हद तक प्रतिस्थापित कर दिया है। जनसंख्या को मानव संसाधन बनाने के लिए आधारभूत ढांचे, साधन-संसाधन और सुविधाओं की आवश्यकता होती है। पौष्टिक आहार, पेयजल, समुचित स्वास्थ्य, स्तरीय शिक्षा और कौशल विकास की व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं द्वारा ही जनसंख्या को मानव संसाधन बनाया जा सकता है। भारत जैसे विकासशील देश की तो बात ही क्या, किसी विकसित देश में भी ये संसाधन और सुविधाएं असीमित नहीं। कृषि भूमि और उसकी उत्पादन क्षमता, अन्यान्य प्राकृतिक संसाधन और यहां तक कि शुद्ध जल और वायु भी असीमित नहीं हैं। साधन-सुविधाओं के अभाव और बढ़ते अपराध के अंतर्संबंध को भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। जनसंख्या वृद्धि, अशिक्षा, गरीबी, कुपोषण, पर्यावरण असंतुलन और प्राकृतिक क्षरण के दुष्चक्र से हम सब अनभिज्ञ भी नहीं हैं।

भूख की छाया में दुनिया

युद्ध और संघर्ष से दुनिया के कई हिस्सों में भुखमरी का संकट गहराने लगा है। इस स्याह परिदृश्य के बीच संयुक्त राष्ट्र की खाद्य एजेंसियों की चेतावनी को गंभीरता से लेने की जरूरत है। उन्होंने आगाह किया है कि आने वाले महीनों में दुनिया के तेरह संकटग्रस्त क्षेत्रों में भीषण भुखमरी की स्थिति पैदा हो सकती है। करीब छब्बीस करोड़ से अधिक लोग पहले ही खाद्य संबंधी गंभीर असुरक्षा का सामना कर रहे हैं।

गौरतलब है कि खाद्य एवं कृषि संगठन और विश्व खाद्य कार्यक्रम ने बीते बुधवार को अपनी साझा रिपोर्ट में कहा है कि जून से नवंबर 2026 के बीच स्थिति और बिगड़ने की आशंका है। इससे समझा जा सकता है कि विश्व के सामने इस समय कितनी बड़ी चुनौती है। हालांकि विकास का दावा करने वाले देशों में भी स्थिति कोई अच्छी नहीं है। ऐसे में पिछड़े और युद्ध प्रभावित देशों में हालात का अंदाजा लगाया जा सकता है। खाद्य एजेंसियों की रिपोर्ट के मुताबिक सूडान, दक्षिणी सूडान, गाजा पट्टी और यमन सबसे अधिक संकट वाले क्षेत्र बने हुए हैं। इसी श्रेणी में सोमालिया और नाइजीरिया को भी शामिल किया गया है। वहीं अल-नीनो के प्रभाव के कारण कई क्षेत्रों में सूखे एवं बाढ़ से स्थिति और खराब हो सकती है। खाद्य एजेंसियों की चेतावनियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दुनिया के किसी हिस्से में कोई व्यक्ति भूखा सो जाता है, तो इसके लिए वे देश भी जिम्मेदार हैं जो मदद करने से हाथ खींच रहे हैं। मानवीय सहायता के लिए धन में कटौती किए जाने का इशारा खाद्य एजेंसियों ने भी किया है। उनकी रिपोर्ट के मुताबिक जरूरतों में भारी वृद्धि के बावजूद खाद्य सहायता और इससे जुड़े कार्यक्रमों के लिए धनराशि वर्ष 2022 के बाद से करीब उनसठ फीसद घट गई है। ऐसे में सवाल है कि बड़े देश सहायता से पीछे हटकर दुनिया की कैसी तस्वीर देखना चाहते हैं? यह दुखद है कि कई देशों में बदहाली को खत्म करने में विश्व असहाय है। हालांकि इस नाउम्मीदी के बीच अमेरिका ने अस्सी करोड़ डॉलर देने का संकल्प जता कर उम्मीद जगाई है। मगर भुखमरी के खिलाफ लड़ाई कब तक चलेगी, कोई नहीं जानता।

बच्चों को कहानी और उदाहरणों के जरिए सिखाएं

आज के समय में बच्चों का ज्यादातर समय मोबाइल, टीवी और गेम्स में बीतता है, जिससे उनके व्यवहार और आदतों पर असर पड़ता है। ऐसे में माता–पिता की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वे बच्चों को सही समय पर सही चीजें सिखाएं। याद रखें, बच्चे का पहला स्कूल उसका घर होता है और उसके पहले शिक्षक उसके माता–पिता होते हैं। इसलिए छोटी उम्र से ही अगर बच्चों को अच्छे मैनर्स और संस्कार सिखाए जाएं, तो उनका व्यक्तित्व बेहतर बनता है। आइए जानते हैं उम्र के हिसाब से बच्चों को क्या सिखाना चाहिए।

1 से 2 साल के बच्चे

इस उम्र में बच्चे सीखने की शुरुआत करते हैं और चीजों को बहुत जल्दी समझने लगते हैं। ऐसे में उन्हें धीरे–धीरे बेसिक मैनर्स सिखाना शुरू करना चाहिए साथ ही उन्हें प्यार से बोलना और इशारों के जरिए अपनी बात समझाना भी सिखाया जा सकता है, क्योंकि इस उम्र में बच्चे ज्यादा देखकर और नकल करके सीखते हैं।

कैसे सिखाएं?

खेल–खेल में सिखाएं

टॉय या एक्टिंग के जरिए शब्दों को दोहराएं

खुद भी वही मैनर्स अपनाकर उदाहरण बनें

इस उम्र में बच्चे जल्दी नकल करते हैं, इसलिए आपका व्यवहार ही उनकी सीख बनता है।

3 से 5 साल के बच्चे

इस उम्र में बच्चे चीजों को बेहतर तरीके से समझने लगते हैं, लेकिन साथ ही उनमें जिद भी बढ़ सकती है। ऐसे में उन्हें प्यार और धैर्य के साथ अच्छी आदतें सिखाना जरूरी होता है। बच्चों को चीजें शेयर करना सिखाएं, ताकि उनमें सहयोग की भावना विकसित हो। साथ ही, दूसरों से मिलते समय ॥द्ब या ॥द्दद्यद्य॰ और जाते समय द्ब्4द्द कहना सिखाएं। इसके अलावा, उन्हें दूसरों की भावनाओं को समझने की आदत डालें, जिससे वे संवेदनशील और समझदार बन सकें।

कैसे सिखाएं?

प्यार और धैर्य से समझाएं

कहानी और उदाहरणों के जरिए सिखाएं

अच्छे व्यवहार पर तारीफ करें

इस उम्र में डांटने के बजाय समझाना ज्यादा असरदार होता है।

6 से 10 साल के बच्चे

इस उम्र में बच्चों में सही और गलत की समझ विकसित होने लगती है, इसलिए उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देना बेहद जरूरी होता है। इस दौरान बच्चों को सही–गलत की पहचान करना सिखाएं, ताकि वे अपने फैसले समझदारी से ले सकें। साथ ही, उनमें सच बोलने की आदत डालें और ईमानदारी का महत्व समझाएं। इसके अलावा, टीमवर्क और मिल–जुलकर रहने की भावना विकसित करें, ताकि वे दूसरों के साथ सहयोग करना सीखें और सामाजिक रूप से मजबूत बनें।

उन्हें जिम्मेदारियां दें

गलतियों पर शांत तरीके से समझाएं

खेल और ग्रुप एक्टिविटी में शामिल करें

इस उम्र में सिखाई गई आदतें जीवनभर साथ रहती हैं।

स्क्रीन टाइम पर रखें नियंत्रण

आजकल बच्चे मोबाइल और टीवी पर ज्यादा समय बिताने लगे हैं, जिसका असर उनकी आदतों और व्यवहार पर पड़ता है। ऐसे में जरूरी है कि पेरेंट्स बच्चों का स्क्रीन टाइम सीमित करें और उन्हें आउटडोर खेल व अन्य शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रेरित करें, ताकि उनका शारीरिक और मानसिक विकास बेहतर तरीके से हो सके।

सिर्फ गिफ्ट नहीं, भावनाएं भी जरूरी! वरना फीका पड़ सकता है रिश्ता

उपहार भावनाओं का दर्पण हैं। उनमें अपनापन, विनम्रता और स्नेह झलकता है। लेकिन यदि उपहार देने के पीछे आपके अहंकार की तुष्टि छिपी हो, तो उसकी चमक रिश्तों की मिठास को फीका कर सकती है।

घर के पुराने संदूक में रखी एक घड़ी, पीले पड़ चुके खत, किसी किताब में दबा सूखा गुलाब या बचपन में मिला कोई छोटा–सा खिलौना, ये सिर्फ वस्तुएं नहीं होतीं, ये उन पलों की आखिरी धड़कनें होती हैं, जिन्हें समय बहुत पीछे छोड़ आया है।

इन्सान अपनी जिंदगी में चाहे कितना भी आगे बढ़ जाए, एक छोटा–सा उपहार उसे अचानक वर्षों पीछे ले जाता है। उस आवाज तक, उस स्पर्श तक, उस रिश्ते तक, जो शायद अब उसके पास नहीं है। शायद इसलिए कुछ चीजें समय के साथ पुरानी नहीं होतीं, बल्कि और गहरी हो जाती हैं।

उपहार देना केवल एक सामाजिक परंपरा नहीं, बल्कि मानव भावनाओं की सबसे सूक्ष्म अभिव्यक्तियों में से एक है। यह एक ऐसी भाषा है, जिसमें शब्दों की आवश्यकता नहीं होती। जहां एक वस्तु, एक छोटा–सा इशारा या एक साधारण–सा प्रयास भी मन के उन कोनों को उजागर कर देता है, जिन्हें हम अक्सर कह नहीं पाते। यह केवल देने और पाने का व्यवहार नहीं, ये रिश्तों की समझ, संवेदनशीलता और आत्मीय जुड़ाव की एक मूक परीक्षा है।

उपहार मनुष्य की भावनाओं की सबसे शांत, लेकिन सबसे गहरी भाषा है। ऐसी भाषा, जिसमें शब्द कम पड़ जाते हैं और संवेदनाएं बोलने लगती हैं। जब कोई व्यक्ति हमें कोई उपहार देता है, तो वह केवल वस्तु नहीं देता, बल्कि यह भरोसा भी देता है कि 'मैंने तुम्हारी छोटी–छोटी बातों को याद रखा है और तुम मेरी जिंदगी में सिर्फ एक नाम नहीं हो।'

शायद इसलिए जीवन के सबसे कीमती उपहार बाजारों में नहीं मिलते। वे किसी मां के हाथों से बने खाने में छिपे होते हैं, किसी पिता द्वारा चुपचाप जेब में रखे गए नोट में, किसी दोस्त के अचानक कंधे पर रखे हाथ में या किसी ऐसे व्यक्ति के लौट आने में, जिससे उम्मीद लगभग खत्म हो चुकी थी।

मनोविज्ञान कहता है कि किसी को कुछ देने पर हमारे भीतर भी सुख का अनुभव होता है। किसी अपने की आंखों में चमक देखना, उसके चेहरे पर मुस्कान देखना यह आनंद कई बार पाने से भी ज्यादा गहरा होता है।

लेकिन इसी भावना के साथ एक अनकही अपेक्षा भी जुड़ जाती है। हम चाहते हैं कि हमारी भावना को उसी गहराई से महसूस किया जाए। जब ऐसा नहीं होता, तो भीतर कहीं हल्की–सी उदासी जन्म लेती है।

इन्सान खोजता अपनापन

आज का समय सुविधाओं का समय है। एक क्लिक में उपहार भेजे जा सकते हैं। चमकदार पैकिंग, महंगे ब्रांड और सोशल मीडिया पोस्ट्स ने कई बार उपहारों को भावना से ज्यादा प्रदर्शन बना दिया है। अगर इस चमक के बीच आज भी इन्सान वही अपनापन खोजता है, क्योंकि उपहार की असली खूबसूरती उसकी कीमत में नहीं, उसमें लगाए गए ध्यान में होती है।

कई बार कोई सस्ता–सा उपहार भी इसलिए अमूल्य हो जाता है, क्योंकि उसमें सामने वाले को समझने की सच्ची कोशिश छिपी होती है। जीवन के सबसे सुंदर उपहार भी अक्सर बिना योजना के आते हैं।

रास्ते में किसी दुकान पर अचानक कोई चीज देखकर किसी की याद आ जाना, किसी पुराने गाने को सुनकर उसे किसी को भेज देना, किसी व्यस्त दिन में बस इतना पूछ लेना– 'तुम ठीक हो?'

ये छोटे–छोटे पल ही रिश्तों की असली पूंजी होते हैं। क्योंकि इन्सान को हमेशा बड़ी चीजें नहीं चाहिए होतीं, कई बार उसे सिर्फ यह अहसास चाहिए कि वह किसी के मन में अब भी मौजूद है।

मिरर गिफ्टिंग आज का सच

हर उपहार संवेदनशीलता से नहीं दिया जाता। कई बार उपहार हमारे अहंकार का प्रतिबिंब बन जाते हैं। हम सामने वाले को वही देने लगते हैं, जो हमें खुद पसंद है। धीरे–धीरे उपहार सामने वाले की जरूरत से ज्यादा हमारी पसंद का प्रदर्शन बन जाते हैं।

मनोविज्ञान में इसे कई बार 'मिरर गिफ्ट' कहा जाता है। ऐसे उपहार, जिनमें सामने वाले से ज्यादा हमारी अपनी पसंद छिपी होती है। पति पत्नी को नया गेमिंग कंसोल दे देता है। दोस्त दोस्त को उसी बैंड का टिकट दे देता है, जिसे वह खुद पसंद करता है। पिता बेटे को वही करियर चुनने की सलाह देता है, जो उनका अधूरा सपना था।

यहां उपहार कई बार प्रेम से ज्यादा अहंकार बन जाता है। जबकि उपहार का मूल अर्थ ही यह है कि कुछ पल के लिए हम अपनी दुनिया से बाहर निकलकर किसी और की दुनिया में प्रवेश करें।

चुनाव आसन नहीं

तोहफा दरअसल वस्तु नहीं, व्यक्ति को समझने की कला है। शायद इसी कारण उपहार चुनते समय लोग सबसे अधिक असुरक्षित महसूस करते हैं।

बाजार में घूमते कदमों से ज्यादा दिमाग भटकता रहता है– 'सामने वाला क्या पसंद करता है'? ऐसा इसलिए क्योंकि कई लोग उपहार खरीदते समय वस्तु नहीं चुनते, रिश्ते बचाने की कोशिश करते हैं। 'उसे अच्छा लगेगा न?'

यह छोटा–सा वाक्य भीतर कितना बड़ा डर छिपाए रहता है, यह केवल वही समझ सकता है, जिसने किसी अपने के लिए देर रात तक ऑनलाइन खूब सारी वेबसाइट को स्क्रॉल किया है।

हालांकि उपहार की कहानी उसके दिए जाने पर खत्म नहीं होती। वह उसके बाद शुरू होती है, जब कोई अकेले में उस उपहार को देखता है, उसे छूता है और उसके पीछे छिपे व्यक्ति को याद करता है। वहीं तय होता है कि वह सिर्फ एक वस्तु था या सचमुच किसी रिश्ते का धड़कता हुआ हिस्सा।

री–गिफ्टिंग से भावनाएं खो जाती हैं

आज के समय में 'री–गिफ्टिंग' रिश्तों का एक अजीब सच बन चुकी है। लोग मुस्कुराकर उपहार स्वीकार करते हैं और फिर किसी और अवसर पर उसे आगे बढ़ा देते हैं। इस प्रक्रिया में वस्तु तो घूमती रहती है, लेकिन उससे जुड़ी भावनाएं कहीं खो जाती हैं। लखनऊ की रागिनी ने भी ऐसा ही अनुभव साझा किया। शादी में मिले एक महंगे शोपीस को उसने अपनी सहेली को दे दिया।

कुछ महीनों बाद वही शोपीस सहेली के घर में दिखाई दिया। बातचीत में पता चला कि उस उपहार के साथ एक भावुक चिट्ठी भी मिली थी, जिसे रागिनी ने कभी पढ़ा ही नहीं था। री–गिफ्टिंग से वह संदेश किसी और के लिए बहुत खास बन गया। रागिनी को तब अहसास हुआ कि हर उपहार केवल वस्तु नहीं होता, उसमें किसी की भावना, समय और उम्मीद भी जुड़ी होती है।

समय है सबसे बड़ा उपहार

किसी थके हुए व्यक्ति को समय देना, किसी रोते हुए इन्सान को बिना सलाह दिए सिर्फ सुन लेना, किसी का बोझ हल्का कर देना, किसी पुराने रिश्ते को एक फोन कॉल से फिर से जोड़ देना ये वे उपहार हैं, जिनकी कोई पैकिंग नहीं होती, लेकिन इनकी याद सबसे लंबे समय तक रहती है।

तकनीक के इस तेज दौर में, जहां हर चीज तुरंत उपलब्ध है, वहां समय सबसे दुर्लभ चीज बन चुका है। इसलिए आज अगर कोई अपना समय, अपना धैर्य और अपनी उपस्थिति किसी को देता है, तो वही सबसे मूल्यवान उपहार है, क्योंकि अंतत: इन्सान चीजों से नहीं, अहसासों से जुड़ता है। वे समय–समय पर लौटकर याद दिलाते हैं कि कभी कोई हमें पूरे मन से याद करता था।

बच्चों को दें भरपूर वक्त, झुंझलाहट दिखाने की जगह प्यार से समझाएं

अभिभावक होना बड़ी जिम्मेदारी है। भागदौड़ भरी जीवनशैली में हमारे पास सबकुछ है लेकिन वक्त नहीं है। ऐसे में बहुत से अभिभावक बच्चों और परिवार के लिए क्वालिटी वक्त नहीं निकाल पाते हैं। इससे बच्चों की परवरिश पर असर पड़ता है। अगर आप भी अपने बच्चों को भरपूर वक्त नहीं दे पा रहे हैं तो सावधान हो जाएं और इस बात की अनदेखी न करते हुए, उनके लिए वक्त निकाले ताकि आपका खुशहाल संसार और खुशहाल हो सके। अगर आपमें पेरेंटिंग स्किल्स नहीं है तो किसी भी तरह से परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। आप इस कौशल को थोड़ा सा सावधानी बरतकर सुधार सकते हैं। आइए जानते हैं कैसे?

आप हमेशा अपने बच्चों के साथ सकारात्मक इंट्रेक्शन रखें। उनसे बातचीत करते वक्त कोई भी नकारात्मक बातें न बोले। बच्चों के साथ अच्छा और शानदार वक्त बिताए। इससे आपके और आपके बच्चों के बीच भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। बच्चों के साथ अच्छा और बेहतरीन वक्त बिताने के लिए आप उनके साथ उनकी एक्टिविटी में भाग लें। बच्चों के साथ खेले–कूदें।

बच्चों को अच्छी और बुरी आदतों के बारे में जानकारी दें। इससे आपका संसार और ज्यादा सुखी और खुशहाल होगा। बच्चों की बातों का रिएक्शन अच्छे तरह से दें।

डिजिटल युग में बच्चों को उम्र के अनुसार सही संस्कार दें

आज के आधुनिक दौर में बच्चों का अधिकांश समय मोबाइल, टीवी और डिजिटल गेम्स में बीत रहा है, जिसका सीधा असर उनके व्यवहार और आदतों पर देखने को मिल रहा है। ऐसे में माता–पिता की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है कि वे अपने बच्चों को सही समय पर सही दिशा और संस्कार दें। यह समझना बेहद आवश्यक है कि बच्चे का पहला विद्यालय उसका घर होता है और उसके पहले शिक्षक उसके माता–पिता ही होते हैं। यदि बचपन से ही बच्चों को अच्छे मैनर्स और जीवन–मूल्य सिखाए जाएं, तो उनका व्यक्तित्व बेहतर और मजबूत बनता है।

इसी क्रम में, उम्र के विभिन्न पड़ावों पर बच्चों को क्या और कैसे सिखाया जाए, यह जानना बेहद जरूरी है। शुरुआती दौर में यानी 1 से 2 साल की उम्र में बच्चे चीजों को तेजी से सीखते और समझते हैं। इस समय उन्हें धीरे–धीरे बुनियादी मैनर्स सिखाना शुरू करना चाहिए, जैसे प्यार से बोलना और इशारों के जरिए अपनी बात समझाना। बच्चे इस उम्र में देखकर और नकल करके सीखते हैं, इसलिए माता–पिता को स्वयं वही व्यवहार अपनाकर उदाहरण बनना चाहिए। खेल–खेल में या खिलौनों के माध्यम से शब्दों को दोहराकर उन्हें सिखाना प्रभावी होता है।

तीन से पांच साल की उम्र तक आते–आते बच्चे चीजों को बेहतर समझने लगते हैं, लेकिन उनमें जिद भी बढ़ सकती है। इस नाजुक दौर में प्यार और धैर्य के साथ अच्छी आदतें सिखाना आवश्यक है। उन्हें चीजों को साझा करना सिखाएं ताकि उनमें सहयोग की भावना विकसित हो। दूसरों से मिलते समय हाय या हेलो कहना और जाते समय बाय बोलना भी इस उम्र में सिखाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, उन्हें दूसरों की भावनाओं को समझने की आदत डालें, जिससे वे संवेदनशील और समझदार बन सकें। कहानियों और उदाहरणों का सहारा लेना चाहिए, और अच्छे व्यवहार पर उनकी तारीफ करनी चाहिए। इस उम्र में डांटने के बजाय समझाना अधिक प्रभावी होता है।

जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं, यानी छह से दस साल की उम्र में उनमें सही और गलत की समझ विकसित होने लगती है। इस समय उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देना बेहद महत्वपूर्ण है। उन्हें सही–गलत की पहचान करना सिखाएं, ताकि वे अपने फैसले समझदारी से ले सकें। उनमें सच बोलने की आदत डालें और ईमानदारी का महत्व समझाएं। टीमवर्क और मिल–जुलकर रहने की भावना विकसित करें, ताकि वे दूसरों के साथ सहयोग करना सीखें और सामाजिक रूप से मजबूत बनें। इस उम्र में बच्चों को छोटी–मोटी जिम्मेदारियां भी देनी चाहिए और उनकी गलतियों पर शांत तरीके से समझाना चाहिए। उन्हें खेल और सामूहिक गतिविधियों में शामिल करना उनके सामाजिक विकास के लिए लाभकारी होता है, क्योंकि इस उम्र में सीखी गई आदतें जीवनभर उनका साथ निभाती हैं।

अंत में, यह भी बेहद महत्वपूर्ण है कि माता–पिता बच्चों के स्क्रीन पर बिताए जाने वाले समय को सीमित करें। मोबाइल और टीवी पर अत्यधिक समय बिताने से बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उन्हें आउटडोर खेल और अन्य शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि उनका शारीरिक और मानसिक विकास संतुलित और बेहतर तरीके से हो सके।

नमक के अपशिष्ट से बनाया जा रहा था पोटाश, किसानों से धोखा बर्दाश्त नहीं : डॉ. किरोड़ी लाल मीणा

लोक टुडे

प्रमोद कुमार,जयपुर। कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने जयपुर के विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र में संचालित फर्टिलाइजर एवं कृषि उत्पाद इकाइयों पर औचक निरीक्षण कर नकली और अवैध कृषि उत्पादों के बड़े नेटवर्क का खुलासा किया। निरीक्षण के दौरान तीन स्थानों पर बिना अनुमति बायो स्टिमुलेंट, बायो फर्टिलाइजर तथा नकली पोटाश का निर्माण और भंडारण पाया गया।

कृषि मंत्री ने बताया कि एक इकाई में नमक के अपशिष्ट से म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी) तैयार कर किसानों को बेचा जा रहा था, जो किसानों के साथ बड़ा धोखा है। इसके अलावा कई उत्पादों पर निर्माण तिथि, एक्सपायरी तिथि और अन्य अनिवार्य जानकारियां उर्वरक नियंत्रण आदेश (एफसीओ)-1985 के मानकों के अनुरूप अंकित नहीं थीं, बावजूद इसके उन्हें ऊंचे दामों पर बाजार में बेचा जा रहा था।

निरीक्षण के दौरान कृषि मंत्री ने वीकेआई स्थित नंदी फर्टिलाइजर्स की सील इकाई का निरीक्षण किया। यहां नमक के अपशिष्ट से पोटाश तैयार किए जाने का मामला सामने आया। इसके बाद रोड नंबर-7 स्थित समृद्धि सर्विसेज नामक सीएंडएफ गोदाम पर भी कार्रवाई की गई, जहां बिना अनुमति बायो स्टिमुलेंट की सप्लाई की जा रही थी। राज्य में बायो स्टिमुलेंट की बिक्री पर रोक होने के बावजूद यह गतिविधि संचालित पाई गई। वहीं चित्तारी एग्री केयर नामक कंपनी में भी बिना अनुमति बायो स्टिमुलेंट और अन्य उत्पाद मिलने की जानकारी सामने आई।

जांच के दौरान एक गोदाम में तरल एवं किण्वित ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर भी पाया गया, जो लाइसेंस में शामिल नहीं था। अधिकारियों को आशंका है कि इस उत्पाद पर भारत सरकार की प्रति टन 1500 रुपये की सब्सिडी भी अनधिकृत रूप से प्राप्त की जा रही थी। मामले की जांच जारी है।

कृषि मंत्री ने अधिकारियों को संदिग्ध इकाइयों की बिक्री तत्काल प्रभाव से रोकने, उत्पादों के नमूने जांच के लिए भेजने तथा दोषी पाए जाने पर संबंधित कंपनियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर कड़ी कानूनी कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही पूरे प्रदेश में ऐसे गोदामों और इकाइयों की व्यापक जांच के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश भी दिए गए हैं। डॉ. मीणा ने कहा कि नकली और घटिया कृषि उत्पाद किसानों की आय, फसल और भूमि की उर्वरता को नुकसान पहुंचाते हैं।

राज्य सरकार किसानों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और अन्नदाताओं के साथ धोखाधड़ी करने वाले किसी भी व्यक्ति या संस्था के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने किये मां अम्बाजी शक्ति पीठ के दर्शन

पूजा-अर्चना कर की देश-प्रदेश की खुशहाली और समृद्धि की कामना

बनासकांठा (गुजरात)/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को गुजरात के बनासकांठा स्थित अम्बाजी शक्ति पीठ में दर्शन किए। उन्होंने मंदिर में विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर देश एवं प्रदेश की खुशहाली, सुख-समृद्धि और जनकल्याण की कामना की।

इस अवसर पर शक्तिपीठ प्रबंधन की ओर से मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए मां अम्बे की प्रतिमा भेंट की गई। कार्यक्रम के दौरान पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री ओटाराम देवासी, सांसद मदन राठौड़ सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

प्रभारी सचिव ने चौहटन नगर पालिका के शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण किया

जयपुर/बाड़मेर। बाड़मेर जिले के प्रभारी सचिव रोहित गुप्ता ने रविवार को चौहटन नगर पालिका की ओर से आयोजित शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण किया। उन्होंने शिविर में लगे विभिन्न काउंटरों का अवलोकन करते हुए आमजन की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान प्रभारी सचिव ने कहा कि शहरी सेवा शिविर में आने वाले आमजन की परिवेदनाओं के निस्तारण के साथ पात्र व्यक्तियों को जन कल्याणकारी योजनाओं से लाभांवित करवाएं। उन्होंने शिविर में आए आमजन से संवाद करते हुए उनकी समस्याओं को सुनकर संबंधित अधिकारियों को मौके पर ही समाधान के निर्देश दिए।

जब एक रेजीमेंट ने रच दिया इतिहास: तीन सेना प्रमुख देने का गौरव

लेखक: अचल जाखड़, प्रेरक वक्ता

भारतीय सेना का इतिहास शौर्य, अनुशासन और गौरवशाली परंपराओं से भरा हुआ है। लेकिन कुछ उपलब्धियाँ ऐसी होती हैं, जो अपने आप में एक मिसाल बन जाती हैं। ऐसी ही एक मिसाल स्थापित की है भारतीय सेना की प्रतिष्ठित बख्तरबंद रेजीमेंट 2nd Lancers (गार्डनर्स हॉर्स) ने, जिसने देश को तीन-तीन सेना प्रमुख देकर अपने नाम एक अनोखा कीर्तिमान दर्ज कराया है। लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ के भारतीय सेना प्रमुख का दायित्व संभालने के साथ ही यह रेजीमेंट भारतीय सैन्य इतिहास में विशेष स्थान प्राप्त कर चुकी है। इससे पहले इसी रेजीमेंट के दो अधिकारी, जनरल जयंत नाथ चौधरी और जनरल दीपक कपूर, भी भारतीय सेना के सर्वोच्च पद तक पहुँच चुके हैं। इस प्रकार 2nd Lancers देश की पहली ऐसी रेजीमेंट बन गई है, जिसने तीन सेना प्रमुख दिए हैं। करीब दो शताब्दियों से अधिक पुरानी इस रेजीमेंट की स्थापना वर्ष 1809 में हुई थी। उस समय इसे गार्डनर्स हॉर्स के नाम से जाना जाता था। अपने लंबे सैन्य इतिहास में इस रेजीमेंट ने अनेक युद्धों और अभियानों में साहस और पराक्रम का परिचय दिया है। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध से लेकर स्वतंत्र भारत के 1965 और 1971 के युद्धों तक, इसके सैनिकों ने हर मोर्चे पर अपने शौर्य की अमिट छाप छोड़ी है। स्वतंत्रता के बाद भी यह रेजीमेंट भारतीय सेना की सबसे सम्मानित और भरोसेमंद आर्मर्ड यूनिटों में गिनी जाती रही है। हैदराबाद के एकीकरण से लेकर पश्चिमी मोर्चे पर हुए महत्वपूर्ण अभियानों तक, इसके जवानों ने देश की सुरक्षा के लिए अपने अदम्य साहस का परिचय दिया है। हम राजस्थान के बाड़मेरवासियों के लिए यह गौरव और भी विशेष हो जाता है, क्योंकि भारतीय सेना की यह ऐतिहासिक रेजीमेंट वर्तमान में बाड़मेर जिले के जसाई सैन्य स्टेशन में तैनात है। सौभाग्य से विश्व की सबसे पेशेवर सेनाओं में से एक भारतीय सेना की इस गौरवशाली इकाई की उपस्थिति हमारे जिले को भी भारतीय सैन्य इतिहास से एक विशेष जुड़ाव प्रदान करती है। वर्तमान कमांडिंग ऑफिसर कर्नल बाला सुब्रमण्यम के नेतृत्व में यह गौरवमयी सफर निरंतर आगे बढ़ रहा है और रेजीमेंट अपनी उत्कृष्ट परंपराओं, अनुशासन तथा राष्ट्रसेवा के मूल्यों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा रही है। किसी भी सैन्य इकाई की वास्तविक पहचान केवल उसके हथियारों या उसकी संख्या से नहीं होती, बल्कि उन मूल्यों और नेतृत्व से होती है, जिन्हें वह पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाती है। 2nd Lancers ने यह सिद्ध किया है कि उत्कृष्ट नेतृत्व, अनुशासन और गौरवशाली परंपराएँ किसी भी संस्था को असाधारण ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती हैं। एक ही रेजीमेंट से तीन सेना प्रमुखों का निकलना केवल एक संयोग नहीं माना जा सकता। यह उस सैन्य संस्कृति, प्रशिक्षण और गौरवशाली विरासत का परिणाम है, जिसने दशकों से उत्कृष्ट नेतृत्व को जन्म दिया है। यही कारण है कि आज 2nd Lancers का नाम भारतीय सेना के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो चुका है। देश के लिए यह केवल एक सांख्यिकीय उपलब्धि नहीं, बल्कि उस सैन्य परंपरा का सम्मान है, जिसने समय-समय पर ऐसे सेनानायक दिए, जिन्होंने भारतीय सेना का नेतृत्व करते हुए देश की सुरक्षा और सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। आज जब लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ भारतीय सेना की कमान संभाल रहे हैं, तब 2nd Lancers (गार्डनर्स हॉर्स) की यह गौरवगाथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई है। यह उपलब्धि बताती है कि जब वीरता, अनुशासन और नेतृत्व की विरासत मजबूत होती है, तो इतिहास स्वयं नए कीर्तिमान लिखता है। और हम बाड़मेरवासियों के लिए यह गर्व का विषय है कि ऐसी गौरवशाली सैन्य परंपरा का एक महत्वपूर्ण अध्याय आज हमारी धरती, जसाई, बाड़मेर से भी जुड़ा हुआ है।

लेखक पेशे से भारतीय रेल्वे में लोको पायलट है। समसामयिक मुद्दे ओर समाज के गम्भीर मुद्दों पर अपनी राय रखते है

बाण माताजी मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव : भव्य शोभायात्रा में उमड़ा चारण समाज

लोक टुडे। बालोतरा

बालोतरा के समीपवर्ती बागुण्डी गांव में चारण समाज की कुलदेवी राजराजेश्वरी श्री बाण माताजी (बाणेश्वरी माता) मंदिर का दो दिवसीय प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव उत्साह व उमंग के साथ शुरू हुआ। महोत्सव के पहले दिन गांव में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्ति के रंग में सराबोर नजर आए। शोभायात्रा के दौरान पूरा बागुण्डी गांव 'मां बाणेश्वरी' के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। चारण समाज के श्रद्धालु कुलदेवी की भक्ति में डूबकर ढोल-ढमाकों, बैंड, शहनाई और डीजे की धुनों पर झूमते और नाचते-गाते हुए चल रहे थे।

बालिकाओं ने निकाली कलश यात्रा -

शोभायात्रा का मुख्य आकर्षण बालिकाओं द्वारा निकाली गई भव्य कलश यात्रा रही। यात्रा में सबसे आगे ढोल वादन करते कलाकार चल रहे थे। आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों से आए श्रद्धालु भी ढोल की थाप पर उत्साह के साथ थिरकते दिखे। मुख्य मार्गों से होती हुई शोभायात्रा श्री बाण माताजी मंदिर परिसर पहुंचकर विसर्जित हुई।

आकर्षक रोशनी से सजा मंदिर, प्रतिमा का हुआ अभिषेक

महोत्सव को लेकर मुख्य मंदिर और पूरे परिसर को रंग-बिरंगी लाइटों व आकर्षक ढंग से सजाया गया है। इस दौरान श्रद्धालुओं ने आराध्य देवी श्री बाण माताजी की मूर्ति का पवित्र द्रव्यों से अभिषेक कर विश्व कल्याण की कामना की। इस धार्मिक आयोजन में बागुण्डी सहित आस-पास के गांवों के कई गणमान्य नागरिक और चारण समाज के प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

आबूपर्वत विकास समिति की बैठक में मुख्यमंत्री के महत्वपूर्ण निर्देश

स्वच्छता युक्त, अतिक्रमण मुक्त रहें आबूराज 'विकास भी, विरासत भी' के मूल मंत्र के लिए प्रतिबद्ध राज्य सरकार: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

आबूराज में शहरी विकास, सड़क, पार्किंग, आवागमन के लिए विश्वस्तरीय सुविधाएं होंगी विकसित

100 करोड़ रुपये से अधिक के विकास कार्यों की आबूराज को मिलेगी बड़ी सौगातें

आबूराज/जयपुर।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आबूराज के पर्यटन, आध्यात्मिक एवं पर्यावरणीय विशिष्टताओं के अनुरूप सर्वांगीण विकास का ब्लूप्रिंट तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने विकास कार्यों को परस्पर समन्वय के साथ समयबद्ध रूप से पूरा करने के साथ ही संभागीय आयुक्त एवं मुख्य सचिव को निरंतर मॉनिटरिंग के लिए निर्देशित भी किया।

मुख्यमंत्री रविवार को आबूराज में आबूपर्वत विकास समिति की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आबूराज में शहरी विकास, सड़क, पार्किंग, आवागमन के लिए विश्वस्तरीय सुविधाएं विकसित की जाएं, ताकि अधिक से अधिक पर्यटकों का आगमन हो। उन्होंने अधिकारियों को नक्की झील के सौंदर्यकरण, प्रकाश व्यवस्था, रंग रोगन, सीढ़ियों की मरम्मत, सीवरेज सहित विभिन्न विकास कार्यों के संबंध में विशेष रूप से निर्देशित किया।

उन्होंने कहा कि आबूराज ऋषि-मुनियों की भूमि रही है। यहां धार्मिक पर्यटन को नई गति प्रदान करने के लिए मंदिरों का सूचीकरण किया जाए। मुख्यमंत्री ने आबूराज को क्लीन एवं ग्रीन सिटी के रूप में विकसित करने पर विशेष जोर देते हुए इसे स्वच्छता युक्त एवं अतिक्रमण मुक्त बनाए रखने के संबंध में निर्देश प्रदान किए। उन्होंने कहा कि आबूराज की सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय विशिष्टता को संरक्षित रखते हुए टोकन कार्य में ऑनलाइन प्रणाली को पूर्ण पारदर्शिता के साथ लागू किया जाए और निर्माण सामग्री के आवागमन पर निगरानी रखी जाए।

'विकास भी, विरासत भी' के मूल मंत्र पर आबूराज का हो रहा विकास

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार आबूराज में 'विकास भी, विरासत भी' के मूल मंत्र पर प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि विवेकानंद पार्क का सौंदर्यकरण, गुरु शिखर का सौंदर्यकरण एवं सुदृढ़ीकरण, अर्बुदा माता मंदिर एवं दत्तात्रेय मंदिर के विकास कार्यों, ईवी व्हीकल को बढ़ावा देने और भारत माता नमन स्थल को नमो उद्यान के रूप में विकसित करने सहित विभिन्न विकास कार्यों

से आबूराज इको फ्रेंडली, क्लीन-ग्रीन एवं स्पिरिचुअल बन सकेगा। इन सभी सहित विभिन्न 100 करोड़ रुपये से अधिक के कार्यों पर उन्होंने दिशा-निर्देश प्रदान किए। इस दौरान उन्होंने पूर्व बैठकों में दिए गए निर्देशों की प्रगति की भी समीक्षा करते हुए कहा कि आबू पर्वत विकास समिति की नियमित बैठक आयोजित की जाएगी।

बैठक में पंचायतीराज राज्य मंत्री ओटा राम देवासी, उद्योग एवं वाणिज्य राज्य मंत्री केके विश्नोई, सांसद मदन राठौड़, लुंबाराम चौधरी, विधायक समाराम, मुख्य सचिव वी श्रीनिवास, अतिरिक्त मुख्य सचिव, वन एवं पर्यावरण आनंद कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव, नगरीय विकास आलोक गुप्ता, स्वायत्त शासन विभाग के शासन सचिव रवि जैन, पर्यटन विभाग की शासन सचिव शुचि त्यागी सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे। वहीं, संबंधित मंत्रीगण एवं विभागीय अधिकारी वीसी के माध्यम से जुड़े। इससे पहले मुख्यमंत्री ने यहां विकास कार्यों पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

योगाभ्यास के जरिए स्वस्थ जीवन जीने का संदेश

बाड़मेर जिला मुख्यालय पर आदर्श स्टेडियम में जिला स्तरीय आयोजन

जिला मुख्यालय से सरहद तक योगाभ्यास में आमजन की भागीदारी

पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, प्रभारी सचिव रोहित गुप्ता, समेत विभिन्न जन प्रतिनिधि उपस्थित रहे

जयपुर/बाड़मेर।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर रविवार को आदर्श स्टेडियम में जिला स्तरीय योग दिवस कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस दौरान जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं आमजन की सहभागिता के साथ योगाभ्यास के जरिए स्वस्थ जीवन जीने का संदेश दिया गया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में रविवार को जिला मुख्यालय से सरहद तक योगाभ्यास कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

बारहवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आदर्श स्टेडियम में पूर्व केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, प्रभारी सचिव रोहित गुप्ता, जिला कलक्टर चिन्मयी गोपाल, पुलिस अधीक्षक चूनाराम जाट, अतिरिक्त जिला कलक्टर राजेन्द्रसिंह चांदावत, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीतेश आर्य समेत विभिन्न जन प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं आमजन की उपस्थिति में योगाभ्यास किया गया। इस दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के उद्बोधन का सीधा प्रसारण किया गया।

जिला स्तरीय कार्यक्रम में योग प्रशिक्षकों के निर्देशन में सामूहिक योगाभ्यास कराया गया। इस दौरान जन प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं कार्मिकों तथा आमजन ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए करीब एक घंटे तक योग के विभिन्न आसनों एवं प्राणायाम का अभ्यास किया। प्रभारी सचिव रोहित गुप्ता ने आमजन को योग को अपनी नियमित दिनचर्या का हिस्सा बनाने एवं नगर परिषद के तत्वावधान में स्वच्छ भारत अभियान में आमजन की सक्रिय भागीदारी संबंधित शपथ दिलाई।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक संपादक: नीरज मेहरा द्वारा बोनस ग्राफिक्स, लक्ष्मी नगर, झोटवाड़ा मार्ग, अजमेर रोड़, जयपुर-302006 से मुद्रित एवं 141, दयानन्द नगर, फेज प्रथम झालाना डूंगरी गली नंबर 19, थाना गांधी नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रबंध संपादक- पी.के.बृजवाल, 9950325930, 9571635930 (कानूनी सलाहकार एडवोकेट कैलाशनाथ भट्ट)